भजन

तर्ज तेरे सुर और मेरे गीत

रूहों ये है अपनी रीत
करनी है आपस में प्रीत

1) इसमें धनी का समाया सुख,क्रोध करेंगे तो पाएंगे दुख
अब तो हमे ये करना होगा, वचन पिया के ले लें हम

2 प्रेम धनी की धनी को है आऊध, प्रेम श्यामाजी के अंग सुध
याद करो अपना वो प्रेम, प्रेम बिना रह न पाएंगे हम

3. जिस दिल में वो प्रेम समाये, गुण-अवगुण नजरों न आए
प्रेम बिना कुछ भी न देखे, प्रेम की है ऐसी परतीत